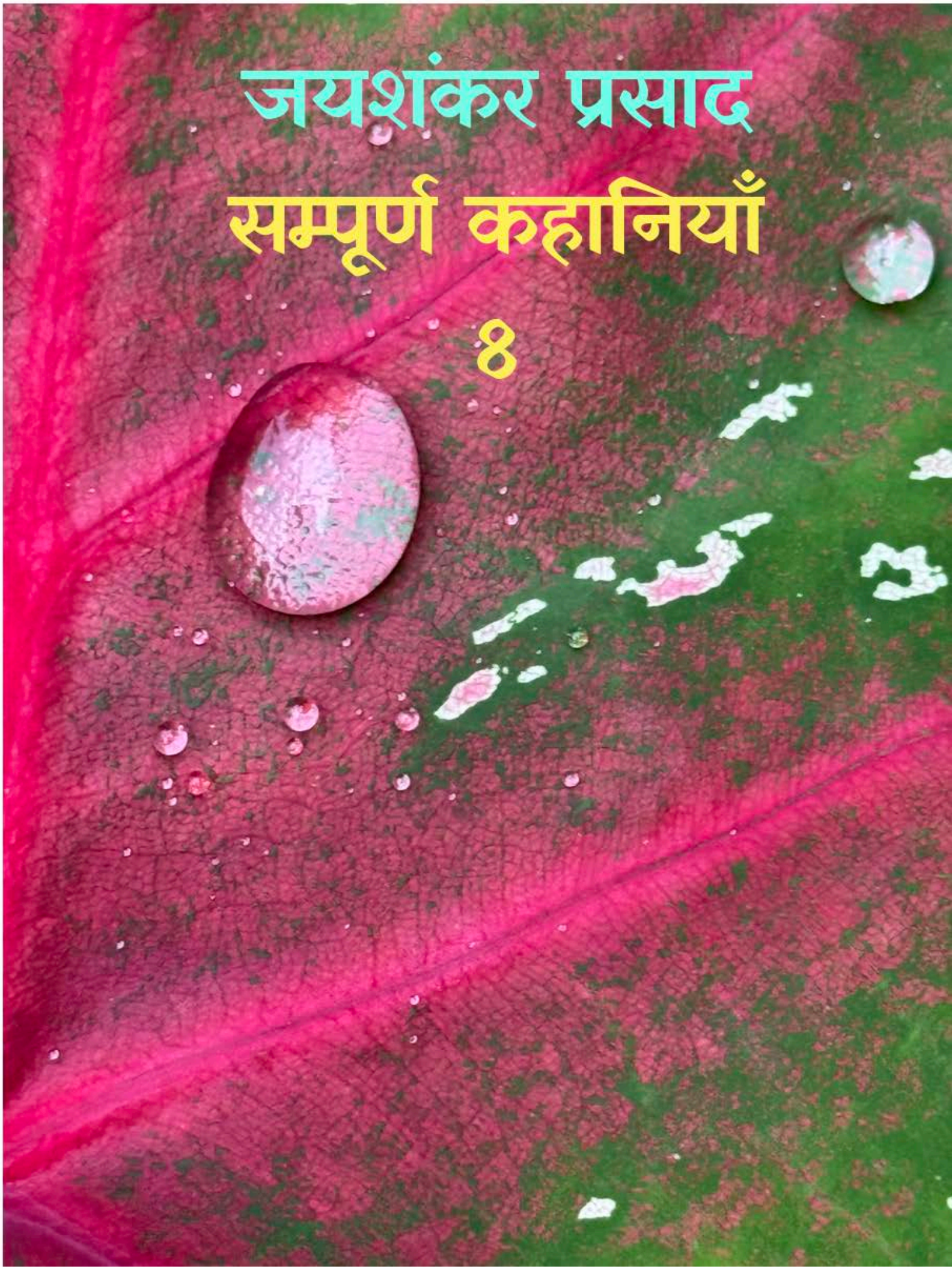
जयशंकर प्रसाद
सम्पूर्ण कहानियाँ
४

जयशंकर प्रसाद सम्पूर्ण कहानियाँ 8

कहानी संग्रह

जयशंकर प्रसाद

अनुक्रम

कलावती की शिक्षा	3
गुंडा	6
गुदड़ी में लाल	26
गूदड़ साईं	31
ग्राम	34
ग्राम-गीत	43

कलावती की शिक्षा

श्यामसुन्दर ने विरक्त होकर कहा-"कला! यह मुझे नहीं अच्छा लगता।" कलावती ने लैम्प की बत्ती कम करते हुए सिर झुकाकर तिरछी चितवन से देखते हुए कहा-"फिर मुझे भी सोने के समय यह रोशनी अच्छी नहीं लगती।''

श्यामसुन्दर ने कहा- “तुम्हारा पलंग तो इस रोशनी से बचा है। तुम जाकर सो रहो।" और तुम रात भर यों ही जागते रहोगे।" अब की धीरे से कलावती ने हाथ से पुस्तक भी खींच ली। श्यामसुन्दर को इस स्नेह में भी क्रोध आ गया। तिनक गये-"तुम पढऩे का सुख नहीं जानती, इसलिए तुमको समझाना ही मूर्खता है।" कलावती ने प्रगल्भ होकर कहा-"मूर्ख बनकर थोड़ा समझा दो।''

श्यामसुन्दर भड़क उठे, उनकी शिक्षिता उपन्यास की नायिका उसी अध्याय में अपने प्रणयी के सामने आयी थी- वह आगे बातचीत करती; उसी समय ऐसा व्याघात। 'स्त्रीणामाद्य प्रणय-वचनं' कालिदास ने भी इसे नहीं छोड़ा था। कैसा अमूल्य पदार्थ! अशिक्षिता कलावती ने वहीं रस भंग किया। बिगड़कर बोले-"वह तुम इस जन्म में नहीं समझोगी।''

कलावती ने और भी हँसकर कहा-"देखो, उस जन्म में भी ऐसा बहाना न करना।''